अशोक का धम्म क्या था तथा उसने अपने धम्म का प्रचार कैसे किया?

अशोक के धर्म में कोई ऐसी बात नहीं है कि जिसे हम बौद्ध कह सकते हैं। इसी प्रकार कर्न महोदय ने लिखा है कि अशोक के कुछ शिलालेखों के अतिरिक्त ~~उनमें~~ उनमें कोई ऐसी बात नहीं मिलती है जो विशेषतया बौद्धों की हो। फ्लीट महोदय ने भी अशोक को बौद्ध मतावलम्बी स्वीकार करने के प्रमुख साक्ष्य उसके शिलालेखों के उद्देश्यों की समालोचना करते हुए यह बतलाया है कि यह शिलालेख बौद्ध धर्म या किसी अन्य धर्म के प्रचारार्थ नहीं निर्मित किये गये थे एवं केवल सम्राट के कर्तव्यों के अनुसार तथा सभी ~~धर्मों के~~ धर्मावलम्बियों के हितों का ध्यान रखते हुए निर्मित किये गये। फ्लीट महोदय का यह मत कि अशोक बौद्ध नहीं था ~~कि यह मत~~ यदि हम भले न स्वीकार करें पर यह तो निश्चय पूर्वक कहा जा सकता है कि अशोक के शिलालेखों में संकुचित धार्मिकता के स्थान पर ~~सर्व~~ सार्वभौमिक नैतिकता की ध्वनि गुंजित होती है।

:-> मौर्य-साम्राज्य के संस्थापक चन्द्रगुप्त मौर्य को क्षत्रिय मानकर उन्हें ब्राह्मण धर्मावलम्बी मानते हैं। अशोक का पिता बिन्दुसार भी ब्राह्मण-धर्मावलम्बी था। अशोक ने भी क्षत्रिय कर्म स्वीकार किया। इसका प्रमाण कलिङ्ग-विजय है। सिंहली अनुश्रुतियों के अनुसार अशोक प्रारम्भ में अत्यन्त क्रूर था। अशोकावदान में भी इसके प्रारम्भिक काल की क्रूरता का प्रमाण मिलता है। इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि कलिङ्ग-विजय के पूर्व अशोक ब्राह्मण धर्मावलम्बी था और इस युद्ध के बाद उसने बौद्ध-धर्म स्वीकार किया। इसका सबसे बड़ा प्रमाण अशोक का तेरहवाँ शिलालेख है जिसमें उसने यह घोषणा की कि "कलिङ्ग-विजय के शीघ्र पश्चात देवानांप्रिय अशोक धम्म के अनुशीलन, धम्म के प्रेम और धम्म के उपदेश के प्रति उत्साहित हो उठा।"

अशोक का धम्म सभी धर्मों का सार था। वह सभी धर्मों से प्रभावित था।

अशोक का धम्म क्या था तथा उसने अपने धम्म का प्रचार कैसे किया?

अशोक के धर्म में कोई ऐसी बात नहीं है कि जिसे हम बौद्ध कह सकते हैं। इसी प्रकार कर्न महोदय ने लिखा है कि अशोक के कुछ शिलालेखों के अतिरिक्त ~~उसम~~ उनमें कोई ऐसी बात नहीं मिलती है जो विशेषतया बौद्धों की हो। फ्लीट महोदय ने भी अशोक को बौद्ध मतावलम्बी स्वीकार करने के प्रमुख साक्ष्य उसके शिलालेखों के उद्देश्यों की समालोचना करते हुए यह बतलाया है कि यह शिलालेख बौद्ध धर्म या किसी अन्य धर्म के प्रचारार्थ नहीं निर्मित किये गये थे एवं पवित्र सम्राट के कर्तव्यों के अनुसार तथा सभी ~~धर्मों के~~ धर्मावलम्बियों के हितों का ध्यान रखते हुए निर्मित किये गये। फ्लीट महोदय का यह मत कि अशोक बौद्ध नहीं था ~~कि यह मत~~ यदि हम भले न स्वीकार करें पर यह तो निश्चय पूर्वक कहा जा सकता है कि अशोक के शिलालेखों में संकुचित धार्मिकता के स्थान पर ~~एवं~~ सार्वभौमिक नैतिकता की ध्वनि गुंजित होती है।

:-> मौर्य-साम्राज्य के संस्थापक चन्द्रगुप्त मौर्य को क्षत्रिय मानकर उन्हें ब्राह्मण धर्मावलम्बी मानते हैं। ~~अशोक~~ अपितु बिन्दुसार भी ब्राह्मण-धर्मावलम्बी था। अशोक ने भी क्षत्रिय कर्म स्वीकार किया। इसका प्रमाण कलिंग-विजय है। सिंहली अनुश्रुतियों के अनुसार अशोक प्रारम्भ में अत्यन्त क्रूर था। अशोकावदान में भी इसके प्रारम्भिक काल की क्रूरता का प्रमाण मिलता है। इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि कलिंग-विजय के पूर्व अशोक ब्राह्मण धर्मावलम्बी था और इस युद्ध के बाद उसने बौद्ध-धर्म स्वीकार किया। इसका सबसे बड़ा ~~दूसरा~~ प्रमाण अशोक का तेरहवाँ शिलालेख है जिसमें उसने यह घोषणा की कि "कलिंग विजय के शीघ्र पश्चात देवानांप्रिय अशोक धम्म के अनुकरण, धम्म के प्रेम और धम्म के उपदेश के प्रति उत्साहित हो उठा।"

अशोक का धम्म सभी धर्मों का सार था। वह सभी धर्मों से प्रभावित था।

व्यावहारिक कर्तव्यों को प्रधानता देने का एक धम्म-अ
बहुत बड़ा फल यह हुआ कि अशोक ने विजयनीतों
को लोगों की रक्षा की।

इस प्रकार हम देखते हैं कि अशोक हमारे सामने जिस धर्म का आदर्श प्रस्तुत करता है, वह अहिंसा और नैतिक आदर्शों पर आधारित एक ऐसा धर्म है, जो केवल मनुष्य के लिए ही प्रस्तुत सभी प्राणियों के लिये है। उसके धर्म की एक महत्वपूर्ण सिद्धान्त था - 'अनालम्भो प्राणिनां अविहिंसा भूतानां' (सभी प्राणियों के लिए अहिंसा)। उसके ये आदर्श अशोक शासकों की परम्परा में एक विशिष्ट स्थान प्रदान करते हैं।

~~अशो~~ अशोक धम्म के प्रचार के लिए निम्न कार्य किये -

(1) धम्म-यात्रा :- अशोक ने अपने धम्म के प्रचार के लिये पश्चिम एशिया, पूर्वी यूरोप, श्रीलंका और बर्मा अपने संदेशवाहक भेजे। उसने महादेव को महिषमंडल, महारक्षित - यवन राज्य, धर्म ~~रक्षित~~ रक्षित को उपरांत, मज्झिम को हिमालय प्रदेश, महाधर्मरक्षित को महाराष्ट्र, रक्षित को वनवासी, सोन और उत्तरा को स्वर्णभूमि तथा महेन्द्र ^तथा संघमित्रा^ को लंका भेजा। ~~अशोक~~

(2.) ~~→~~ अधिकारियों की नियुक्ति :-> अशोक ने धम्मप्रचार के लिए अधिकारियों की नियुक्ति की। ये अधिकारी थे - पुरुष, युक्त, रज्जुक तथा प्रादेशिक।

(3.) धम्म-महापात्र की नियुक्ति :-> अपने धम्म के प्रचार के लिये अशोक ने धम्म - ~~अधि~~ महापात्रों की भी नियुक्ति की।

(4) धम्म-स्तम्भ का निर्माण :-> धम्मानुशासन के उद्देश्य से अशोक ने धर्मस्तम्भों का निर्माण कराया।

(5) लोक-कल्याण के कार्य :-> अशोक ने जीवोपकार के लिए वट-वृक्ष लगवाये। कुऐं, जलाशय और धर्मशालाओं का निर्माण कराया। जीव-हिंसा पर प्रतिबन्ध लगा दिया।

इस प्रकार हम देखते हैं अशोक के धम्म का मूल का- उद्देश्य नैतिक उत्थान था। अशोक का धम्म एक नैतिक धम्म था। S. R. Kohli ने उचित ही लिखा है →

"These principles of Dhamma ley which the emperor intended to guide the lives of the people were issued in a series of edicts and engraved on rocks or on specially prepared pillars in or about the 17th year of his reign."

Sem- I History

Phon - 9113389993

धारशिला थी।

Fleet ने अशोक के धम्म को राजधर्म स्वीकार किया है लेकिन Fleet का यह विचार उचित नहीं लगता क्योंकि अशोक का धम्म साम्प्रदायिक संकीर्णता से बहुत दूर था। V.A. Smith ने उनके धम्म को सार्वभौम धर्म स्वीकार किया है। Smith के इस मत को इतिहासकार R.K. Mukherji स्वीकार करते हुए लिखते हैं - The Dhamma of the edicts is not any particular Dhamma or religious system, but a moral law independent of caste or creed.

अतः यह कहना उचित होगा कि अशोक का धम्म नैतिकता पर आधारित था। यह धम्म सदाचार का धर्म था जो केवल मानव-कल्याण के लिए बनाया गया था। उनके धर्म में ईर्ष्या, द्वेष, संकीर्णता और साम्प्रदायिकता का कोई स्थान नहीं था। उनके धम्म में अहिंसा का सर्वोच्च स्थान प्राप्त था। पशु-जीवन की अवध्यता, धार्मिक सहिष्णुता की प्रबलता, धर्मदान का महत्व, धम्मविजय तथा धर्मव्रत का पालन अशोक के धम्म के प्रमुख सिद्धान्त थे। अतः हम कह सकते हैं कि अशोक का धम्म कर्मकांडवादी या रूढ़िवादी नहीं था।

अशोक के धार्मिक उपदेशों को स्पष्ट रूप से समझ लेने पर हम उनके धर्म को भलीभाँति जान सकते हैं। अशोक के धार्मिक उपदेश निम्नलिखित थे।

(i) अपरिचित, (ii) सम्प्रतिपत्ति, (iii) सचेय, (iv) सोचये, (v) धम्मकिता तथा (vi) मर्दो (माधुर्य).

इन सिद्धान्तों को मूर्त रूप प्रदान करने के लिए अशोक ने निम्नलिखित आचरण के अनुसरण का सन्देश दिया।

(i) पशु वध का त्याग, (ii) अहिंसा, (iii) माता-पिता की सेवा, (iv) बड़े और छोटों की सुश्रुषा.

(2)

कलिंग-विजय के बाद अशोक का हृदय परिवर्तन हुआ और उनके मन में यह भावना उठी कि अविजित देश विजय में हत्या, मृत्यु और लोगों को बंदी बनाकर ले जाने से दुःख का विषय है और यह एक महान सम्राट के लिए अपमान की बात है। सच्ची विजय मनुष्य के हृदय पर कर्तव्य के कानून से प्राप्त की जा सकती है। उनकी इच्छा थी कि सभी जीवों की सुरक्षा, आत्मनियंत्रण, मस्तिष्क की शांति और खुशी प्राप्त हो। अशोक ने एक राजाज्ञा में घोषणा की थी — "सभी धर्म किसी न किसी कारण से सम्मान के योग्य हैं" इस प्रकार का काम करके अपने धर्म का सम्मान करने के साथ अन्य धर्मों और लोगों की सेवा करना है।

अशोक का धम्म मूल-रूप में आचरणों का विधान था। उनका विचार था कि क्रोध, नैष्ठुर्य, मान, ईर्ष्या आदि के पाप से मोक्ष ही धम्म है। उसके द्वितीय और तृतीय स्तम्भलेख और त्रयोदश शिलालेख में धम्म के सार का ज्ञान है। Rock Edict XIII के आधार पर इतिहासकार Sita Ram Kohli ने अशोक के धम्म पर प्रकाश डालते हुए लिखा है — Now that law or Dhamma as understood by Ashoka and as revealed by the edicts, is a code of ethics or simple virtues. It prescribes certain duties which a person must ~~obs~~ observe in his daily life.

अशोक के अनुसार दया, दान, सत्यता, पापहीनता, कल्याण तथा शुद्धि ही धम्म है। उसने धम्म शब्द का प्रयोग बौद्ध-धर्म के लिए नहीं किया था क्योंकि बौद्ध-धर्म के लिए उसने संघ या सद्धर्म शब्द को अपनाया था। बौद्ध-धर्म के प्रसिद्ध चार आर्य सत्यों और अष्टांगिक-मार्ग का उल्लेख भी उसके अभिलेखों में नहीं मिलता है। दरअसल नैतिकता ही उसके 'धम्म' की

(V) गुरुओं के प्रति आदर, (VI) मित्र, परिचित, ब्राह्मणों और श्रमणों के साथ उचित व्यवहार (VII) सेवकों और मजदूरों के साथ अच्छा बर्ताव और थोड़ा व्यय।

अशोक के उपर्युक्त धार्मिक सिद्धान्त, जिसमें सम्पूर्ण मानव-जाति के ~~कल्याण~~ हित की व्यवस्था की गयी है, विश्व के किसी भी धर्म में पाये जा सकते हैं।

अशोक के धर्म की विशेषताएं ⇒

अशोक के धार्मिक सिद्धान्तों का विश्लेषण करते हुए यह बतलाया गया है कि अशोक का धर्म सभी धर्मों का सार था, अर्थात् इसके सिद्धान्त अन्य धर्मों के सिद्धान्तों के समान ही थे। फिर भी, इस धर्म की कुछ ~~विशेषताएं हैं~~ अपनी मौलिकता एवं विशेषता है। इन विशेषताओं को हम निम्न-वर्गों में विभाजित कर सकते हैं –

(I) सार्वभौमिकता ⇒ साम्प्रदायिकता से रहित इस धर्म में विश्व के सभी धर्मों का मूलभूत तत्व निहित है। यह सार्वभौमिकता साधारण बात नहीं है।

(II) अहिंसा ⇒ प्रथम शिलालेख से हमें ज्ञात होता है कि अशोक अहिंसा का कितना बड़ा पुजारी था। उसने ~~उन~~ उन यज्ञों को पूर्णतया बन्द करा दिया जिनमें पशुबलि दी जाती थी। ब्राह्मणों ने पशुबलि निषेध की आज्ञा रखी, किन्तु अहिंसा का कट्टर पुजारी अशोक इस विषय का समझौता करने को तैयार न थी।

(III) धार्मिक सहिष्णुता ⇒ प्रत्येक धर्मावलम्बी का आदर करना और उनके धर्म को अपने धर्म सा ही समझना अशोक के धर्म की एक बड़ी विशेषता है।

(IV) नैतिक आदर्शों का प्राधान्य ⇒ धर्म के चार अंगों दर्शन, नैतिक-आदर्श, कर्मकाण्ड तथा कला में से अशोक ने नैतिक आदर्शों पर ही विशेष जोर दिया।

(V) प्रायोगिकता ⇒ दर्शन को महत्व न देकर

Downfall of Napolean Bonapart

था। क्योंकि उसने एक ही बार में अनेक कार्यों को करने का प्रयास किया था। युद्ध में जैसे-जैसे वह जीतते चला जाता था वैसे-वैसे उसकी महात्वाकांक्षा बढ़ती चली जाती थी और अंत में वह सिकन्दर महान की भाँति विश्व सम्राज्य का स्वपन देखने लगा था। अतः यदि नेपोलियन थोड़े से में सन्तोष कर लेता तो निश्चित ही ऐसा दुर्भाग्यपूर्ण दिन देखने से वंचित रह जाता। लेकिन उसकी अनन्त एवं असीम महात्वाकांक्षा ने उसको पतन के गर्त में गिरा कर ही दम लिया।

(I) नेपोलियन की चारित्रिक दुर्बलताएँ → व्यक्तिगत रूप से नेपोलियन में कई चारित्रीक दुर्बलताएँ थी। जरूरत से अधिक वह अपने आप में विश्वास रखने वाला था। उसकी विश्वसनीयता हमेशा उसे धोखे में रखे रही। और युरोपीय देशों में उसके विरुद्ध बारूद की ढेर बढ़ती जा रही थी। वह विश्वास कर लेता था कि पराजित देश सदा के लिए उसकी प्रभुता मान लिए हैं। ऐसा ही विश्वास उसने स्पेन के राजा को पेंशन देकर एवं राजकुमार को बन्दी बना कर किया था। उसकी मनमानी एवं निर्णायक बुद्धि उसके ह्रास का कारण बनी। Talleyrand और Fouche जैसे व्यक्तियों को भी उसने अपना विश्वासपात्र नहीं बनाया। वह समझता था कि उसकी बुद्धि ही सर्वश्रेष्ठ है अतः उसके निर्णय भी सर्वश्रेष्ठ होंगे। यही अनुमान बाद में गलत साबित हुआ। और उसके पतन का एक महत्वपूर्ण अध्याय बना।

(II) नेपोलियन का उग्र स्वभाव → नेपोलियन के जिद्दी एवं उग्र स्वभाव उसके पतन के रास्ते में उसे ले जाने में और मददगार साबित हुए। टिलसिट के बाद और 1809 के Austrian अभियान बाद उसके स्वभाव में और उग्रता आ गई।

(IV) भाई-भतिजावाद की नीति → अपने संबंधियों के प्रति अत्यधिक मोह भी उसके पतन का एक प्रमुख कारण बनी। तथा इस प्रकार का मोह उसकी चारित्रिक दुर्बलताओं का एक जीता-जागता उदाहरण है। उसने अपने भाईयों एवं सम्बन्धियों को विजीत प्रदेशों शासक बनाया। परन्तु तब उसे घोर निराशा हाथ लगी जब उसके सारे सम्बन्धी उसके साथ छल करते रहे। जब तक उसे अपनी भूल का एहसास होता तब तक बहुत देर हो चुकी थी एवं उसके पतन के मार्ग में एक और अध्याय का समावेश हो चुका था।

(V) त्रुटीपूर्ण सैनिक व्यवस्था → नेपोलियन की त्रुटिपूर्ण सैनिक व्यवस्था उसके पतन के लिए कम जबाबदेह नहीं थी। नेपोलियन ने जिस सैन्यवाद को जन्म दिया उनका सिर्फ एक ही उद्देश्य था, विनाश करना। यह सच है की इंग्लैण्ड को छोड़कर उसने युरोप की समस्त महत्वशाली शक्तियों को परास्त किया था।

Fall of Napoleon Bonaparte

Downfall of Napoleon Bonaparte

Q.→ नेपोलियन बोनापार्ट के पतन के कारणों की समीक्षा करें।

Ans → प्रकृति बड़ी रहस्यमयी है। इसकी कोख में बड़ी से बड़ी समस्याओं, बड़े से बड़े राष्ट्रों एवं इतिहास की धारा को बदल देने वाले महान से महान व्यक्तियों में भी उत्थान एवं पतन देखे गये हैं। तेजस्विता, साहस एवं शक्ति के आगार बनी नेपोलियन बोनापार्ट भी इस उदाहरण के अपवाद नहीं बन सके। अपने उत्कर्ष के दस वर्षों तक उसने समस्त युरोप के नक्शों को ही बदल डाला और युरोपीय राज्य अपनी निरीह आँखों से उसके कारनामों को किंकर्तव्यविमूढ़ होकर देखते रहे।

अतः 1807 से 1815 तक का इतिहास पुरे विश्व का इतिहास न होकर केवल युरोप और पुरे युरोप का न होकर केवल फ्रांस का और पुरे फ्रांस का इतिहास न होकर, अद्भुत एवं चमत्कारिक व्यक्तित्व के मालिक नेपोलियन बोनापार्ट का इतिहास था जिसने अपने महान सम्राज्य की स्थापना अपने अद्भुत विजयों की महान श्रृंखला के फलस्वरूप की थी। जिसने अपने कुशल नेतृत्व दुरदर्शी नीति, एवं सफल सैन्य संचालन द्वारा समस्त युरोप के नक्शे में के सर्वोच्च शिखर पर आसीन करा दिया उसी नेपोलियन को जिसकी एक कराहट पर पुरे युरोप में थरथराहट एवं उसकी एक गर्जना पर पुरे युरोप के रोंगटे खड़े हो जाते थे। एक साधारण मानव की तरह मित्रराष्ट्रों के सामने इस अवस्था में एकदिन आत्मसमर्पण कर देना पड़ेगा, इसकी किसी ने कल्पना तक नहीं की थी। और अन्त में 6 वर्षों तक कैदी जीवन St. Helena के द्वीप में बिताने उपरान्त 5 मई 1821 ई० को नेपोलियन की भौतिक लीला समाप्त हो गई।

चुँकि नेपोलियन जैसे व्यक्तित्व का पतन इस तरह हुआ कि हमें यह सोचना पड़ता है कि वे कौन से तत्कालिक एवं संचयी कारण रहे होंगे जिसने नेपोलियन जैसे योद्धा को परास्त कर दिया। अतः अब हम नेपोलियन के शासन सम्बन्धी बातों पर गौर करते हैं तो हम पाते हैं कि उसके शासन के मूलभूत आधार ही कुछ ऐसे थे जिसमें नेपोलियन के पतन के कारण छिपे हुए थे। अतः हर तरह से अवलोकन करने के उपरान्त अब हम नेपोलियन के पतन के कारणों का अवलोकन करते हैं। या दृष्टिपात करते हैं

1) असीम महात्वाकांक्षा → असीम महात्वाकांक्षा व्यक्ति के पतन का प्रमुख कारण हुआ करती है। इसमें कोई संदेह नहीं की नेपोलियन एक अत्यन्त ही बुद्धिमान व्यक्ति था परन्तु था तो वह मनुष्य ही। उसके लिए सब कुछ करके चले जाना संभव नहीं

पुराणो की संख्या काफी है, फिर भी अट्ठारह पुराण महत्वपूर्ण हैं, जिनमें पद्म, विष्णु, शिव, भागवत, अग्नि, गरुण आदि उल्लेखनीय है। इनमें प्राचीन राजवंशों का ऐतिहासिक विवरण मिलता है।

बौद्ध साहित्य में जातकों का प्रथम स्थान है। इसमें बुद्ध की पूर्व जन्म की गाथाएं है। ~~इनका~~ त्रिपिटक ~~इनके~~ तीन हैं- सूत्र पिटक, अभिधम्मपिटक और विनय पिटक। लंका के महावंश और दीपवंश बौद्ध महाकाव्य भी उल्लेखनीय है।

भारतीय इतिहास ~~में जैनधर्म भी~~ के निर्माण में जैन साहित्य भी बहुत उपयोगी है। इसमें जैन आगम सर्वोपरि है। जैन आगम में प्रसिद्ध स्थान बारह अंगों का है। आचार्य हेमचन्द्र की रचनाओं में परिशिष्ट पर्व भारतीय इतिहास पर काफी ~~प्रकाश~~ प्रकाश डालता है। भद्रबाहु चरित्र से चन्द्रगुप्त मौर्य के समय पर प्रकाश पड़ता है,

धर्मोत्तर-साहित्य प्राचीन भारतीय इतिहास के अध्ययन स्त्रोत में प्राचीन धर्म निरपेक्ष साहित्य भी काफी महत्वपूर्ण है। इनमें कौटिल्य का अर्थशास्त्र पैतंजली का महाभाष्य, कालिदास का मालविकाग्नि मित्रम्, विशाखदत्त का मुद्राराक्षस, बाणभट्ट का हर्ष चरित्र, कामंदक का नीतिशास्त्र और कल्हण का राजतरंगिनी विशेष उल्लेखनीय है।

(1) धार्मिक-साहित्य स्रोत

~~साहित्य~~ :- साहित्यिक स्रोतों को दो भागों में बाँटा जा सकता है। धार्मिक साहित्य और धर्म निरपेक्ष साहित्य — धार्मिक साहित्य के अंतर्गत वेद, ब्राह्मण ग्रन्थ, आरण्यक, उपनिषद, वेदांग आदि आते हैं। वेद चार हैं — (1) ऋग्वेद (2) यजुर्वेद (3) सामवेद (4) और अथर्ववेद। इनमें ऋग्वेद प्राचीनतम ग्रंथ है। वेद का शाब्दिक अर्थ ज्ञान है और आर्यों का ज्ञान इन्हीं वेदों में संकलित है। ऋग्वेद की रचना का प्रारम्भ तो आर्य ने भारत में आने के पहले ही कर चुके थे। इनमें कुल मिलाकर 10 मण्डल एवं 1028 श्लोक हैं। सामवेद का अर्थ है गान प्रधान। यजुर्वेद में यज्ञ विधियों का प्रतिपादन किया गया है। अथर्ववेद में आर्यों और अनार्यों का विचारों का समन्वय मिलता है। वेदों के बाद ब्राह्मण ग्रन्थों की गणना होती है। गद्य में रचित ये सारे ग्रंथ वेद की टीका करते हैं। इसमें मुख्यतः यज्ञों तथा उनकी विधियों का सविस्तार वर्णन किया गया है। इसमें थोड़ा बहुत समाजिक, राजनीतिक व्यवस्थाओं का भी वर्णन मिलता है।

आरण्यकों में यज्ञ के अतिरिक्त चिंतन को अधिक महत्व दिया गया है। आरण्यकों में जिस विचार धारा का बीजारोपण हुआ था, उसका विकास उपनिषदों में हुआ। उपनिषदों में दार्शनिक प्रश्नों, लोक परलोक की समस्याओं पर विचार किया गया है। उपनिषद का अर्थ है, समीप बैठना अर्थात शिष्य गुरु के समीप बैठ कर जो ज्ञान प्राप्त करता था और उस संदर्भ में जो बातें होती थी उन्हीं से उपनिषद की

...ment of Napolean ... Bonaparte

Downfall of Napolean Bonapart

उसने अपने विजय अभियानों के चरम परिणति के लिए सेना में कम उम्र के लड़कों को भी सैनिक सेवा में भर्ती किया था। बाद में वह अपनी सेना में डच, जर्मन, इटालवी एवं पुर्तगालियों को भी ~~अपनी सेना में~~ भर्ती किया था। इस तरह नेपोलियन की सेना कई राष्ट्रों की सेना बन कर रह गई थी। जिसमें संगठन एवं एकता का अभाव था। यह नेपोलियन के लिए बड़ा ही घातक सिद्ध हुआ।

(6) निरंकुश शासन व्यवस्था → नेपोलियन की शासन व्यवस्था निरंकुशता पर आधारित थी। निरंकुशता में आदर एवं भक्ति नहीं होती इस प्रकार फ्रांस एवं युरोप के लोग नेपोलियन के प्रति आदर एवं भक्ति नहीं दिखला रहे थे बल्कि डर से उसके आज्ञा का पालन करते थे। नेपोलियन के राज्य में स्वतंत्रता का भी अभाव था। चूंकि स्वतंत्रता को अधिक दिनों तक दबाकर रखना किसी भी शक्ति के वश के बाहर की चीज है। अतः नेपोलियन के साथ "चिराग तले अंधेरा" वाली कहावत चरितार्थ होती है। अनन्त दूरदृष्टि के रहते हुए भी वह अपने अन्तःदोष को नहीं देख पाता था। अतः निरंकुशता ने उसके विशाल साम्राज्य को ही जड़ से उखाड़ दिया एवं उसके पतन को और सुनिश्चित कर दिया।

(7) सीमित जीवन → सीमित जीवन शक्ति नेपोलियन के पतन का एक और कारण था। आरम्भ में तो उसने महान नेतृत्व का परिचय दिया। मानव कार्य का इतना परिपूर्ण लेखा और कहीं नहीं जो नेपोलियन के जीवन में देखने को मिलता है परन्तु बाद में चलकर उसके सोचने की शक्ति क्षीण होती चली गई। चारों ओर से घिरे आतंक में उसने फ्रांस का पथ पर्दर्शन किया था। किन्तु आतंक तुफान ज्यों-ज्यों बढ़ता गया वह कालांत होता गया, उसके पास कोई चारा नहीं रह गया। जिससे वह आतंक के तुफान से धीरे ~~[illegible]~~ ~~[illegible]~~ फ्रांस रूपी जहाज का बेड़ा पार कर सके। इस तरह वह तुफान के चपेट में आकर आतंक के महासागर में अन्ततः डुब ही गया। अर्थात निश्चित तौर पर उसका पतन हो गया।

(8) नेपोलियन की महाद्वीपीय व्यवस्था → नेपोलियन की असफलता एवं पतन का एक प्रमुख कारण था - Continental System —
वह इंग्लैण्ड को अपना सबसे बड़ा दुश्मन मानता था और उसे शिकस्त नीचा दिखाने के उद्देश्य को लेकर वह दृढ़ प्रतिज्ञ था। उसके विचार में इंग्लैण्ड की शक्ति एवं सौभाग्य उसके व्यापार पर ही निर्भर करती थी। इसलिए उसने युरोप भर में उसके माल को रोकने के लिए प्रयास जारी रखा था। युरोप के राज्य दैनिक जीवन के संचालन में कठिनाई महसूस करने लगे थे। यही कारण था कि रूस, स्वीडेन, पोप [illegible] आदि नेपोलियन के शत्रु बन [illegible]

(6) Sem-I Phone No — 9113389993

(ii) विदेशी लेखकों तथा यात्रियों के विवरण :-

अति प्राचीन काल में ही भारत का सम्बन्ध एशिया और यूरोप के विभिन्न देशों से रहा है। यह व्यापारिक, राजनीतिक और धार्मिक सम्बन्ध थे। विदेशी लेखकों तथा यात्रियों ने भारत के सम्बन्ध में जो कुछ लिखा है उनसे भारतीय इतिहास के निर्माण में सहायता मिलती है, सिकन्दर के आक्रमण के बाद मेगास्थनीज, फ्लुटार्क, जस्टीन आदि प्रमुख यूनानी लेखक थे।

मेगास्थनीज, चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में सेल्यूकस का राजदूत के रूप में भारत आया। इसने भारत पर Indica (इंडिका) नामक ग्रन्थ ~~का निर्माण~~ निर्माण किया, जिसमें मौर्य कालीन भारत का वर्णन है।

फाह्यान — पाँचवी शताब्दी में भारत आया और 14 वर्ष तक भारत रहा। इसने भारत में बौद्ध धर्म की स्थिति का वर्णन किया।

युवान-च्वांग — यह हर्षवर्धन के काल में भारत आया था और इसने तत्कालीन धार्मिक अवस्था व राजनीतिक स्थिति का वर्णन किया है।

सुलेमान → नवीं शताब्दी में भारत आए इस ~~अरब~~ अरब यात्री ने पाल एवं प्रतिहार राजाओं के विषय में लिखा है। अलबरूनी → यह महमूद गजनवी का समकालीन था। इसने अपने ग्रन्थ तहकीक-उल-हिन्द में भारत का बहुत ही रोचक वर्णन किया है।

निष्कर्ष :- यह कहा जा सकता है कि प्राचीन भारत में प्रा० भा० इतिहास के स्रोत अनेक हैं। इनमें पुरातत्व, साहित्य

प्रश्न → प्राचीन भारतीय इतिहास के अध्ययन के स्रोतों पर प्रकाश डालें।

उत्तर: → यह सत्य है कि प्राचीन रोम और यूनान की तरह भारत में इतिहासकार नहीं पाये जाते हैं, परन्तु इससे यह नहीं समझ लेना है कि भारत का अतीत ऐतिहासिक घटनाओं से शून्य या सर्वथा निराधार होगा। पश्चिमी इतिहासकारों ने यह प्रमाणित करने का प्रयास किया है कि प्राचीन भारतीय इतिहास के अध्ययन स्रोत नगण्य नहीं है। Winternitz ने अपनी पुस्तक History of Sanskrit Literature में लिखा है कि — It was never been the Indian way to make distinct distinction between legend and history Historiography in India was never more than a branch of epic poetry. किंतु पश्चिमी इतिहासकारों के इन कथनों में आंशिक सत्यता है। प्राचीन भारतीय इतिहास के अध्ययन स्रोत पर्याप्त है जिन्हे हम तीन भागों में बाँट कर अध्ययन कर सकते हैं —

(1) पुरातत्व → इसके अंतर्गत उत्खनन से प्राप्त सामग्री जैसे- अभिलेख, सिक्के, खण्डहर स्मारक आदि है। पुरातत्व वैज्ञानिक तथ्यों पर आधारित है। अतः यह सबसे महत्वपूर्ण साधन है। प्रागैतिहासिक काल का समस्त इतिहास हम इसी सामग्री से प्राप्त करते हैं। हड़प्पा, मोहन जोदड़ो, लोथल, रोपड़ आदि प्राची-

-तिहासिक स्थानों की निश्चित (ग) पुरातत्व उत्खनन से भी पर्याप्त जानकारी सम्भव हो सकता है। शिशुपाल गढ़, राजगृह आदि स्थानों से प्राप्त सामग्री के आधार पर भारतीय इतिहास के ~~निर्धारण~~ निश्चित निर्माण की काफी सहायता मिली है। अभिलेखों के अंतर्गत गुफा लेख, शिला लेख, स्तम्भ लेख ताम्रपत्र आदि आते हैं। अभिलेखों के द्वारा सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक जीवन पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है। अशोक के अभिलेख खारवेल का हाथी-गुफा अभिलेख, हर्षवर्धन का बंशखेरा अभिलेख और मधुबन ~~अभि~~ अभिलेख है। रुद्रदामन का जूनागढ़ अभिलेख बड़े महत्वपूर्ण है।

सोना चाँदी ताम्बा आदि विभिन्न धातुओं से बने सिक्के प्राचीन भारतीय इतिहास के निर्णय में सहायक सिद्ध हुए हैं। 300 ई० पू० से लेकर 200 ई० प० तक के भारतीय इतिहास का ज्ञान हमें मुद्राओं से प्राप्त होता है। तिथि के निर्धारण में अभिलेख और सिक्के समान्य रूप से महत्वपूर्ण हैं। सिक्कों के द्वारा राजाओं के राज्य विस्तार उनकी कृतियों एवं वंशावलियों से सम्बन्धित ज्ञान प्राप्त होता है। इसी तरह प्राचीन भवन, मंदिर मूर्तियाँ आदि भी प्राचीन भारतीय इतिहास पर प्रकाश डालती है। प्राचीन खण्डहरों से शिल्प-शैलियों पर प्रकाश पड़ता है। इनमें सामाजिक धार्मिक, आर्थिक, विषयों पर भी जानकारी प्राप्त होता है। दक्षिण पूर्वी एशिया में भी भारतीय शिल्प कला के अवशेष मिलते हैं।

(2) साहित्य :

(3) विदेशी लेखकों एवं यात्रियों के विवरण :

रचना हुयी है। प्रमुख उपनिषदों में केन, कठ प्रश्न माण्डुक आदि महत्वपूर्ण हैं। गार्गी और मैत्री जैसे मनिषियों ने भी इनके निर्माण में योगदान दिया।

वेदांग छः है - शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द और ज्योतिष। ये सब वेदों के अंग माने जाते हैं। वैदिक स्वरों का विशुद्ध रूप से उच्चारण के लिए शिक्षा का निर्माण हुआ कल्प का अर्थ होता है - विधि या नियम। व्याकरण के माध्यम से भाषा का स्वरूप स्थिर किया गया है। इस दृष्टिकोण से पाणीनी का ग्रन्थ अष्टाध्यायी महत्वपूर्ण है। पतंजली में इस प्रकार की जो टीका लिखी गई है, वह महाभाष्य के नाम से प्रसिद्ध है। निरुक्त यह बतलाता है कि अमुक शब्द का अमुक अर्थ क्यों होता है, वैदिक काल में जो छन्द का प्रयोग हुआ, उससे यह स्पष्ट है कि उस काल में उस छन्द का शास्त्र का पूर्ण विकास हुआ था। उसी काल में ज्योतिष शास्त्र का भी विकास हुआ है।

रामायण और महाभारत महत्वपूर्ण महाकाव्य है। इसके माध्यम से भारतीय इतिहास पर काफी प्रकाश पड़ता है। रामायण को आदि काव्य और महाभारत को इतिहास माना गया है। इतिहास के दृष्टिकोण से महाभारत को शौति पर्व विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इसी प्रका-